



भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध

भट्ट विशालकुमार प्रहलादराय

अभ्यास :- आचार्य इन संस्कृत (M.A. in Sanskrit)

शोधच्छात्र: श्रीसोमनाथ-संस्कृत-यूनिवर्सिटी, वेरावल

सार :- भारत में सदियों से चली आ रही परंपरा अद्वितीय है। विभिन्न ज्ञान हमारी संस्कृति और परंपरा में पड़ा हुआ है पर हम सबको ये सब प्राप्त हुआ और जानने को मिला उसके लिए हम सब ऋषिमुनियों के ऋणी हैं।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध

प्रस्तावना

भारत ज्ञान की भूमि है। सदियों से ज्ञान की धारा अविरल चल रही है। इसका श्रेय हमारे ऋषि मुनियों को जाता है। श्रेष्ठ ज्ञान का उपार्जन उन सब मुनिश्रेष्ठ के द्वारा प्राप्त हुआ है। हमारी संस्कृति और परम्परा ऐतिहासिक और अति प्राचीन है। अर्वाचीन समय में भी हम सब इसकी महत्त्वता से प्रभावित हैं।

भारतीय ज्ञान की परम्परा :-

भारत को ज्ञान की भूमि कहते हैं। ज्ञान को हमने मुक्ति का साधन माना और ज्ञानार्जन को श्रेष्ठ कर्म। गौर से देखें तो हमने ही श्रेष्ठ सीखाने को ज्ञान की पहली कसौटी माना यानि वह जो आत्मज्ञान न कराता हो वह ज्ञान ही नहीं है।

“ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः”। अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

“ऋते ज्ञानात् न सुखम्” अर्थात् ज्ञान के बिना सुख नहीं है।

संस्कृत में कहा :-

“विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥” (सुभाषितरत्नभाण्डागार)

अर्थात् :- विद्या द्वारा विनय प्राप्त होता है। विनय से पात्रता मिलती है। पात्रता से धन की प्राप्ति होती है और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।

हमारे जीवन व्यवहार के हर क्षेत्र में चाहे वह विद्या अर्जन हो, व्यापार हो, चिकित्सा हो, कला हो या फिर विज्ञान हो, भारत की मनीषा ने अपार ग्रन्थों की रचना की है। हमारे वेदों में अखूट ज्ञान भरा पड़ा है। परा और अपरा विद्या पर भी अनगिनत ग्रन्थों की



रचना की है। नीति ग्रन्थों की तो बात क्या करें, जिसमें कर्तृत्व और अकर्तृत्व यानि 'करने योग्य क्या है और न करने योग्य क्या है' इसका विस्तृत विवरण दिया गया है। कहते हैं सम्पूर्ण वेद ही विधि और निषेध के ज्ञान से भरा है। इसका प्रमाण है कि जब दुनिया के दूसरे हिस्सों में सभ्यता शैशव अवस्था में थी और घूटनों के बल चल रही थी तब हम तक्षशीला, नालन्दा और विक्रमशीला के रूप में ज्ञानप्राप्ति के महान संस्थान खड़े कर रहे थे। कहते हैं कि एक समय भारत समृद्ध था, सम्पन्न था, श्रेष्ठ था और जगद्गुरु के पद पर आसीन था। और यह भी कहते हैं कि इन सबके पीछे भारत की ज्ञान परंपरा मुख्य कारण थी। भारत ज्ञान की भूमि है तो इसमें हमारा आशय है। जहाँ ज्ञान को प्रमुखता देने वाला समाज रहता हो वह देश को भारत कहते हैं। भारत भा = मतलब ज्ञान है और जो ज्ञान का अन्तिम शिखर है वह भारत देश है। भारत के ज्ञान परंपरा की जड़ें बहुत गहरी हैं। विस्तृत आयाम है। ज्ञान परंपरा का मूल आधार संस्कृत भाषा ही है।

संस्कृत में कहा है :-

“जानाति विविधा भाषा जानाति विविधा कलाः ।

आत्मनः नैव जानाति यो न जानाति संस्कृतम् ॥” (सुभाषितरत्नभाण्डागार)

अर्थात् :- बहुत सारी भाषाएँ जानते हैं। बहुत सारी कला ये जानते हैं। मगर जब तक संस्कृतभाषा नहीं जान लेते तब तक आत्मा को नहीं जान सकते हैं।

दूसरे श्लोक में कहा :-

“संस्कृते सर्वविज्ञानं संस्कृते सकला कला ।

संस्कृते सर्ववैशिष्ट्यं संस्कृते किं न विद्यते ॥” (सुभाषितरत्नभाण्डागार)

अर्थात् :- संस्कृतभाषा में सर्व विज्ञान पड़ा हुआ है। सब प्रकार की कला है वो भी संस्कृत भाषा में है। सब प्रकार की विशिष्टता यानि वैशिष्ट्यम् वो भी संस्कृत भाषा में है। प्रश्न यह उठता है कि संस्कृत भाषा में क्या नहीं है।

भारतीय ज्ञानपरंपरा में शोध :-

“भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा ।” अर्थात् :- भारत की प्रतिष्ठा दो प्रकार में है। संस्कृत भाषा और हमारी प्राचीन संस्कृति ये दो हमारी प्रतिष्ठा हैं।

महर्षि पाणिनीय विरचित व्याकरण में तो यहा तक बता दिया है कि हम बात करते या बोलते हैं तब कौनसा शब्द किस प्रकार और कौन-सी प्रक्रिया से बनता और निकलता हो। जैसे कि 'क, ख, ग, न, ड' ये सब वर्ण कण्ठ द्वारा निर्मित होंगे और मुख में से बाहर निकलेंगे। उसी प्रकार 'च, छ, ज, झ, ञ, य, श' तालव्य वर्ण कहते हैं यानि हमारी जुबान ऊपर स्पर्श करेगी तब ये वर्ण बनेंगे। उसी प्रकार जब हमारी जुबान मुख में टेढ़ी होगी तब 'त, थ, द, ध, न, ल, स' ये वर्ण बनेंगे। उसी प्रकार 'प, फ, ब, भ, म' ये सब वर्ण दोनों होठों मिलायेंगे तब बनेंगे। हमारे ऋषि मुनियों ने सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान हम सबको विरासत में दिया है।



महर्षि वेदव्यास विरचित विश्व का पहला और महान काव्य दिया हुआ है, उसका नाम महाभारत है।

“महत्वाद् भारवत्त्वाच्च महाभारतमुच्यते।” (महाभारत, आदिपर्व 1/273)

अर्थात्:- महत्ता, भार अथवा गंभीरता की विशेषता से ही जिसे महाभारत कहा गया है, वह विश्वसाहित्य का सर्वाधिक विशालकाय महाकाव्य है।

इस महाकाव्य में सभी और संपूर्ण वेदों का गुप्ततम रहस्य, उनके अंग एवं उपनिषदादि का सार संकलित किया गया है। इस ग्रंथ में इतिहास और पुराणों का मंथन करके उनका प्रशस्त रूप प्रकट किया गया है। इसमें भूत, वर्तमान और भविष्य - इन तीनों कालों की तीन संज्ञाओं के साथ बुढ़ापा, मृत्यु, भय, रोग और पदार्थों के सत्यत्व एवं मिथ्यात्व का निश्चय किया गया है। इसमें अधिकारी भेद से भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्मों एवं आश्रमों का भी लक्षण बताया गया है। इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों के कर्तव्यों का विधान, तपस्या, ब्रह्मचर्य का स्वरूप, अनुष्ठान एवं उनके फलों का वर्णन किया गया है। महाभारत में भीष्म पर्व में 25 में अध्याय से 43 अध्याय तक श्रीमद्भगवद्गीता का वर्णन प्राप्त होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता भगवान् श्रीकृष्ण के स्वमुख से कही गयी है। उसमें 18 अध्याय एवं 700 श्लोक हैं। तथा सम्पूर्ण विश्व की समस्या का समाधान श्रीमद्भगवद्गीता में पड़ा हुआ है। विभिन्न योगों का वर्णन गीता में प्राप्त होता है। वर्तमान समय में विश्व के न्यायतंत्र में भी शपथ के ग्रन्थ के लिए ग्रहण किया है।

सहायक सूची –

१. उपकार प्रकाशन यू.जी.सी.नेट (संस्कृत)
२. संस्कृत साहित्य इतिहास
३. सुभाषितरत्न भाण्डागार
४. लघुसिद्धान्तकौमुदी



**MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (On-line)**

International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding
this certificate to

भट्ट विशालकुमार प्रहलादराय

In recognition of the publication of the paper entitled

भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध

Published in Volume 03, Issue 06, December 2025.

EDITOR IN CHIEF